शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -3
March
2025

शिक्षक प्रशिक्षण में नवाचार और नई शिक्षा नीति 2020: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

विजय पाल वर्मा
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
डॉ कविता गुप्ता
पर्यवेक्षक
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर, (म.प्र.)

सारांश

डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा था "प्रबुद्ध नागरिकता के तीन घटक होते हैं: मूल्य प्रणाली के साथ शिक्षा, धर्म को आध्यात्मिक शक्ति में बदलना और विकास के माध्यम से आर्थिक समृद्धि लाना।" हम अपने शिक्षकों में युवा पीढ़ी के लिए मशाल वाहक बनने और भारत के विकास तथा निरंतर प्रगति को सही दिशा में आकर देने के लिए विश्वास करते हैं। 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक उच्च मानकों के शिक्षित और कुशल व्यक्तियों के साथ एक ज्ञानवान समाज बनने की भारत की आकांक्षा के लिए हमें अपनी स्कूल शिक्षा प्रणाली की मजबूत नींव सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। समानता, गुणवत्ता, सुलभता और सामर्थ्य के सिद्धांतों के आधार पर, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बालकों के साथ-साथ शिक्षकों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 काफी आशाजनक लग रही है क्योंकि इसमें 21वीं सदी में आवश्यक बदलावों को सही ढंग से उजागर किया गया है। शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुछ और सुधार अपनाकर उन्हें लागू करने से शिक्षा व्यवस्था बड़े लक्ष्य हासिल कर सकती है। शिक्षकों को दायरे से बाहर सोचकर बड़े शिखर छूने में मदद कर सकती है तथा बच्चों को अपनी क्षमता पहचान में सहायता दे सकती है। वर्तमान में शिक्षकों के मूल्यांकन के लिए गोपनीय रिपोर्ट (सीआर) पद्धति लागू है। यह कार्य-प्रदर्शन तथा लक्ष्य आधारित पद्धति नहीं है। इसमें इस बात को महत्व नहीं दिया जाता कि शिक्षकों के प्रयासों से बालकों में सीखने की क्षमता कितनी बढ़ी है। इसे और वस्तुनिष्ठ बनाने के लिए कुछ और पद्धति अपनाने की जरूरत है। शिक्षकों के कार्य-प्रदर्शन को आंका जाना चाहिए। वेतन वृद्धि प्रदर्शन आधारित होनी चाहिए, इस समय प्रचलित कार्यकाल आधारित नहीं। साथ ही प्रोत्साहन का प्रावधान भी होना चाहिए। इससे कार्य-प्रदर्शन सुधारने में मदद मिलेगी। इस तरह बेहतर प्रदर्शन से अपेक्षित परिणाम प्राप्त

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -3
March
2025

किये जा सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा अपनाए गए बहुईयामी नवाचार दृष्टिकोण से शिक्षक शिक्षा को पुनर्जीवित करने की संभावना है।

कुंजीभूत शब्द
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, गुरुकुल, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ)- 2005, एनसीटीई, बहु-विषयक, नवाचार, मास्टर इंस्ट्रक्टर, प्रशिक्षण।

शोध विस्तार

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस बात पर विचार किया गया कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को गतिशील कैसे रखा जाए ? इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों की भूमिका के महत्व पर विशेष जोर दिया गया है। इस नीति में कहा गया है कि "शिक्षक वास्तव में हमारे बच्चों के भविष्य और उनके माध्यम से देश के भविष्य को आकार देते हैं"। शिक्षकों को गुरु कहकर भी संबोधित किया जाता है। भारतीय संस्कृति में शिक्षक को गुरु कहने की परंपरा बहुत प्राचीन है। जिससे पता लगता है कि हमारे समाज में सदियों से शिक्षकों को अपना सबसे सम्मानित सदस्य समझा जाता रहा है। वह पीढ़ी दर पीढ़ी कौशल, ज्ञान एवं आचार-व्यवहार सीखाने का जो पावन कार्य करते हैं यह उसका सम्मान है। हालांकि समय के साथ बड़े पैमाने पर उनके शोषण के कारण बच्चों को लायक बनाने वाले इन सृजनहारों की भूमिका के प्रति उदासीनता का रवैया देखा गया है। किंतु लगातार बदलते विश्व में, शिक्षकों को केंद्र में रखते हुए, शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल सुधार की आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षकों की भर्ती, प्रशिक्षण एवं योग्यता आधारित आकलन व्यवस्था में बदलाव करना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का घोषित लक्ष्य शिक्षकों को फिर से समाज के सबसे सम्मानित सदस्यों के रूप में स्थान देना है। इसमें शिक्षकों के सशक्तिकरण को एक आवर्ती विषय बनाए रखा गया है और यह समझा जाता है कि गुणवत्ता और जवाब देही सुनिश्चित करते हुए उनकी आजीविका, सम्मान, गरिमा और स्वायत्तता सुनिश्चित करके इसे प्राप्त किया जा सकता है।

शिक्षक प्रशिक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत में प्राचीन समय में गुरुकुल में शिक्षण वास्तव में बहु-विषयक था क्योंकि यह जीवन कौशल और वेदों की शिक्षा प्रदान करने पर केंद्रित था।[1] बौद्ध धर्म के प्रसार के दौरान भारत

में शिक्षकों के प्रशिक्षण की एक औपचारिक प्रणाली शुरू की गई थी। मठवासी व्यवस्था प्रचलित थी। जिसमें प्रत्येक शिक्षार्थी को एक उपदेशक (उपाज्जय) की देखरेख और मार्गदर्शन में रखा जाता था।[2] भारत में स्कूली शिक्षा और शिक्षण की वर्तमान शैली का उदय ब्रिटिश शासन के दौरान हुआ। विक्टोरियन स्कूल शिक्षा प्रणाली से प्रेरित होकर यह प्रणाली एक व्यवहारवादी प्रतिमान पर केंद्रित थी जहां शिक्षा का संबंध विद्यार्थियों को ब्रिटिश शासन के कार्यों को विनम्रता पूर्वक निष्पादित करने के लिए अंग्रेजी बोलने वाले अनुशासित क्लर्कों को तैयार करने से था।[3] इसने शिक्षकों को भी मुख्य रूप से कक्षा में शिक्षण के लिए एक मैकेनिक के रूप में तैयार किया था।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ)- 2005, शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफटीई)-2009 और शिक्षा का अधिकार अधिनियम की सफल शुरुआत के साथ, भारत में शिक्षक शिक्षा की प्रणाली में धीमी गति से बदलाव आया। समय के साथ रट कर याद करने के बजाय ज्ञान की तामीर पर जोर दिया गया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 के बाद शिक्षक शिक्षा कार्यनीति का उद्देश्य शिक्षकों को जानकारी के द्वारपाल के बजाय ज्ञान के सूत्रधार बनने के साथ-साथ शिक्षण को कम पाठ्यपुस्तक-उन्मुख बनाना और ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना है।

2012 में न्यायमूर्ति वर्मा आयोग ने भी पूर्व-सेवा और सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया था। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 2014 में बी.एड कार्यक्रम का पुनर्गठन किया और इस की अवधि को दुगना करके दो वर्ष कर दिया। राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एनसीटीई) द्वारा तैयार किए गए नए शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में योग शिक्षा, आईसीटी, शांति तथा मूल्य शिक्षा, स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा और जनसंख्या शिक्षा जैसे कई बदलाव किए गए।[4]

शिक्षक प्रशिक्षण और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

वैश्विक तंत्र तथा रोजगार का परिदृश्य बदलने के साथ बालकों के लिए यह समझना और भी जरूरी हो गया है कि कैसे सीखें। इसलिए शिक्षा अन्य बातों के साथ-साथ महत्वपूर्ण

चिंतन, रचनात्मकता, बहु-विषयक अध्ययन, अनुकूलन, नवाचार और समस्या निदान के तरीके सीखने पर केंद्रित होनी चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा को अधिक शिष्य केंद्रित, आनंदकारी, प्रयोगात्मक, खोजोन्मुख बनाना होना चाहिए। शिक्षा व्यवस्था को विज्ञान एवं गणित के साथ-साथ मूल कलाओं, मानविकी, क्रीड़ाओ और खेलों को भी अपनाना चाहिए। भाषाओं,साहित्य, संस्कृति तथा संस्कारो को सम्मिलित करने के महत्व को भी नहीं भुलाया जाना चाहिए क्योंकि यह सिखने वालों में सभी आयामों के विकास में मदद करेगा तथा उनका सामर्थ्य बढ़ाएगा। शिक्षक जिस तरह से विद्यार्थियों के साथ कक्षा में बात करते हैं और जो अनुभव बताते हैं वह विद्यार्थियों के भावनात्मक, शैक्षिक तथा सामाजिक शिक्षण के लिए बहुत अहम होते हैं। इसलिए शिक्षकों का प्रशिक्षण और भी जरूरी हो जाता है।

नई शिक्षा नीति में कहा गया है कि शिक्षकों को अपनी दक्षता में सुधार करने एवं अपने काम में नवीनतम तकनीकों और विधियों के बारे में सीखने के अवसर निरंतर दिए जाएंगे। यह अवसर स्थानीय, क्षेत्रीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं के साथ-साथ और ऑनलाइन शिक्षक विकास माड्यूल्स सहित विभिन्न माध्यमों से दिए जाएंगे। ऐसे मंच बनाए जाएंगे ताकि शिक्षक अपने विचार एवं सर्वोत्तम कार्य प्रणालियों को साझा कर सकें। प्रत्येक शिक्षक से यह अपेक्षा की जाएगी कि वह अपनी रुचि के अनुसार निरंतर व्यावसायिक दक्षता सुधारने के लिए कम से कम 50 घंटे के सीपीडी कार्यक्रमों में भाग ले। सीपीडी कार्यक्रमों में विशेष रूप से बुनियादी साक्षरता एवं अंक ज्ञान, सीखने के परिणामों के प्रारंभिक एवं अनुकूलनीय आकलन, दक्षता आधारित अध्ययन से जुड़े नवीनतम शिक्षा विज्ञान को तथा प्रयोगात्मक अध्ययन से सम्बद्ध नई-नई शिक्षण विधियों के साथ-साथ कला-एकीकृत, खेल-एकीकृत तथा कथाकारिता दृष्टिकोण जैसी शिक्षण विधियों को व्यवस्थित रूप से शामिल किया जाएगा। समाज में मौजूद विविधता तथा सामाजिक आर्थिक स्तरों की भिन्नता को देखते हुए शिक्षकों के लिए मांग अनुरूप प्रशिक्षण की जरूरत है। प्रशिक्षण मांग के अनुरूप अथवा आवश्यकता अनुरूप, निरंतर, व्यावहारिक तथा अधिक केंद्रित होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक प्रशिक्षण के संबंध में निम्न बातों का उल्लेख किया गया है।[5]

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -3
March
2025

मांग अनुरूप प्रशिक्षण

इस समय प्रशिक्षण व्यवस्था सभी के लिए एक जैसी है अर्थात सभी के लिए केवल एक प्रशिक्षण मॉड्यूल है। हमारा देश विविधताओं से भरपूर है। शिक्षक शहरी, ग्रामीण, जनजाति,व दूरस्थ क्षेत्रों में पढ़ाते हैं। ऐसे तमाम कारकों को ध्यान में रखते हुए शिक्षक की जरूरत के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। प्रशिक्षण शिक्षकों की आवश्यकता एवं माहौल के अनुरूप होना चाहिए।

अधिक व्यावहारिक प्रशिक्षण

इस समय शिक्षकों को सैद्धांतिक प्रशिक्षण दिया जाता है। उत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने के लिए इसमें व्यावहारिक और प्रयोगात्मक ज्ञान पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। नए पाठ्यक्रम के बारे में सूचना प्रशिक्षण सत्रों में व्याख्यानों के जरिए दी जाती है जबकि विभिन्न गतिविधियों के जरिए शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा सकता है। शिक्षकों के लिए आवश्यकता अनुरूप प्रशिक्षण होना चाहिए। यह सोचकर कि शिक्षकों को कक्षाओं में क्या करना होता है, उन्हें अभ्यास के लिए अपने कौशल को और निखारने तथा सुधार हेतु प्रतिक्रियाएं प्राप्त करने के और अधिक अवसर दिए जाने चाहिए।

लक्ष्य केंद्रित प्रशिक्षण

फिलहाल प्रशिक्षण तभी दिया जाता है जब पाठ्यक्रम में बदलाव किए जाते हैं या कुछ नया जोड़ा जाता है। ऐसे प्रशिक्षण सामान्य तरह के होते हैं। प्रशिक्षण लक्ष्य केंद्रित होना चाहिए। जिसे आंका जा सके और जो परिणामोन्मुख हो। उदाहरण के लिए भाषा के कोर्स के लिए शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षु को कविताएं सुनाने की तकनीक का प्रभावी उपयोग करना सिखाया जा सकता है। इस तरह से हम सामान्य प्रशिक्षण के बजाय लक्ष्य केंद्रित प्रशिक्षण की तरफ बढ़ सकते हैं और बेहतर नतीजे हासिल कर सकते हैं।

अविरत प्रशिक्षण

शिक्षकों को एक बार प्रशिक्षण देने के बाद उसे पूर्ण मान लिया जाता है। इस दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद एक ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें उनसे पूछा जाए की कक्षा में पढ़ाते समय क्या उन्हें किसी तरह की कठिनाई का सामना

करना पड़ता है ? यदि हां तो व्यवस्था उन कठिनाइयों को दूर करने में सहायता कर सकती है। शिक्षकों को प्रशिक्षण के बाद भी निरंतर सहायता दी जानी चाहिए। उन्हें प्रशिक्षण के बाद अवलोकन के आधार पर प्रतिक्रिया दी जानी चाहिए। शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के साथ-साथ प्रशिक्षण प्रक्रिया का निरंतर जारी रहना भी महत्वपूर्ण है।

शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र में चुनौतियां

शिक्षक शिक्षा के साथ-साथ कुछ चुनौतियों के कारण प्रशिक्षण और भर्ती की प्रणाली सहित शिक्षक प्रशिक्षण के क्षेत्र पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक प्रशिक्षण से संबंधित चुनौतियों का उल्लेख किया गया है जिनमें से कुछ चुनौतियों का यहां संक्षिप्त रूप में उल्लेख किया जा रहा है -

1. शिक्षक प्रशिक्षक संस्थान बाकी उच्च शिक्षा संस्थानों से अलग हटकर काम कर रहे हैं। पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक बहु विषयक शिक्षा, शिक्षक शिक्षा संस्थानों में नहीं दी जा रही है। यह सुनिश्चित करने के लिए कोई प्रणाली नहीं है कि केवल अभिप्रेरित और मेधावी व्यक्ति शिक्षण को व्यवसाय के रूप में चुने।
2. शिक्षकों को, आज न केवल पाठ्य पुस्तकों में पाठ्यक्रम के साथ, बल्कि विद्यार्थियों को सक्षम बनाने वाली, हमेशा विकसित होने वाली तकनीकों, बदलते बाजार के रुझानों के साथ-साथ संस्कृति और मान्यताओं के अनुरूप खुद को लगातार अद्यतन करने की आवश्यकता है।
3. चार वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम एक दोहरी प्रमुख समग्र स्नातक डिग्री कार्यक्रम है जो बी.ए बी.एड, बी.एससी बी.एड और बी.कॉम बी.एड, शिक्षकों के लिए न्यूनतम प्रवेश आवश्यकता होगी।
4. स्वतंत्र रूप से कार्यरत सभी शिक्षक शिक्षा संस्थानों (टीईआई) को 2030 तक बहु-बिषयक संस्थानों के रूप में बदलना होगा।
5. शिक्षण मूल्यांकन के लिए न तो कोई मापनी ही निर्दिष्ट है और न ही प्रतिपुष्टि प्रदान करने के लिए कोई सर्वमान्य मानक या निर्दिष्ट पद्धति ही विद्यमान है।[6]

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -3
March
2025

शिक्षा प्रशिक्षण के क्षेत्र में संभावनाएं

1. शिक्षक की शक्ति को स्वीकार करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रणालीगत सुधार किए गए हैं जो शिक्षण को प्रतिभाशाली युवाओं की पसंद के आकर्षण पेशे के रूप में उभरने में मदद करेंगे।
2. बहु-विषक विश्वविद्यालयों और संस्थानों को मनोविज्ञान, दर्शन, समाजशास्त्र, तंत्रिका विज्ञान, भाषा, कला, विज्ञान आदि जैसे अन्य विभागों के सहयोग से शिक्षा विभाग स्थापित करने और शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम चलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।[7]
3. *एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत अत्याधुनिक शिक्षाशास्त्र पढ़ाया जाएगा और प्रारंभिक बचपन देखभाल तथा शिक्षा (ईसीसीई), मूलभूत साक्षरता तथा संख्यात्मकता (एफ एल एन), खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र, मंच-आधारित शिक्षाशास्त्र, समग्र शिक्षा और भारत तथा इसके मूल्यों, लोकाचार, कला, परंपराओं की समझ प्रदान करेगा।[8]
4. शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक के तहत विशेषज्ञता बढ़ाने, गहरी सामाजिक मनोवैज्ञानिक समझ , शिक्षा शास्त्र में नई विधियों, शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग और नेतृत्व कौशल में सेवाकालीन शिक्षकों की सहायता के लिए ऑनलाइन, ऑफलाइन और मिश्रित मॉड्यूल की उपलब्धता की योजना बनाई जा रही है।
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 प्रत्येक शिक्षक के प्रति वर्ष कम से कम 50 घंटे व्यवसायिक विकास जारी रखने की परिकल्पना करता है।
6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए हाल में एनसीईआरटी ने शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों और स्वायत्त निकायों के सहयोग से स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों शिक्षकों, प्रधान शिक्षकों, प्रधानाचार्य और शैक्षिक प्रबंधन तथा प्रशासन में अन्य हित धारकों के लिए निष्ठा (स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल) एकीकृत प्रशिक्षण कार्यक्रम1.0, 2.0 और 3.0 ऑनलाइन प्रारंभ किया है।
7. नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पेशेवर मानक विकसित करने का भी संकेत है। पेशेवर मानकों की 2030 में समीक्षा की जाएगी तथा उन्हें संशोधित

किया जाएगा। उसके बाद व्यवस्था के प्रभाव के कड़े आनुभाविक विश्लेषण के आधार पर हर 10 साल में समीक्षा और संशोधन किया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा प्रशिक्षण के क्षेत्र में काफी आशाजनक लग रही है क्योंकि इसमें 21वीं सदी में आवश्यक बदलावों को सही ढंग से उजागर किया गया है। शिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुछ और सुधार अपना कर उन्हें लागू करने से शिक्षा व्यवस्था बड़े लक्ष्य हासिल कर सकती है। शिक्षकों को दायरे से बाहर सोचकर बड़े शिखर छूने में मदद कर सकती है तथा बालकों को अपनी क्षमता पहचानने में सहायता दे सकती है।

सन्दर्भ

1. लाल बिहारी रमन, भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएं, रस्तोगी पब्लिकेशन शिवाजी रोड मेरठ, पृष्ठ संख्या 3
2. मदान पूनम, भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास तथा समस्याएं, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ संख्या 29
3. भट्टाचार्य जी एस, अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या 21
4. योजना मासिक पत्रिका, फरवरी 2022, पृष्ठ संख्या 15
5. योजना मासिक पत्रिका, फरवरी 2022, पृष्ठ संख्या 41
6. भट्टाचार्य जी एस, अध्यापक शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, पृष्ठ संख्या 78
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, पृष्ठ संख्या 61
8. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, पृष्ठ संख्या 68-69